International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 11 Issue 6, Nov. - Dec., 2023, Impact Factor: 7.326

माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के समायोजन का उनके सामाजिक-आर्थिक स्तर के आधार पर अध्ययन

डॉ. प्रभात शुक्ल[1], संजय कुमार[2]

1प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग, स्वामी शुकदेवानन्द कालेज, शाहजहाँपुर, उ0प्र0।
2शोध छात्र, एम.जे.पी. रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उ0प्र0।

ABSTRACT

शिक्षा व्यक्तिगत, सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है। सैकड़ों वर्षों से अनूसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और पिछड़े वर्गों के बालक-बालिकाएं, दबे-कुचले रहे विकास के अवसर उनको प्राप्त नहीं हुए, उनकी शिक्षा की ओर कोई ध्यान नहीं दिया गया और उनका शोषण किया गया। आज भी अनुसूचित जातियाँ विभिन्न शैक्षिक व दैनिक जीवन की समस्याओं से ग्रसित हैं जिसके कारण शिक्षा व जीवन में समायोजन सम्बन्धी व अन्य समस्याओं से ग्रस्त हैं। अतः माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के समायोजन का उनके सामाजिक-आर्थिक स्तर के आधार पर अध्ययन करने हेतु उक्त शोध किया गया है। साथ ही समोजन को अच्छा करने हेतु आवश्यक सुझाव भी दिए गए हैं।

Keywords: शिक्षा, माध्यमिक स्तर, अनुसूचित जाति, समायोजन, सामाजिक-आर्थिक स्तर।

प्रस्तावना

भारतीय जातीय विविधता का मौलिक कारण भारत का इतिहास है। भारत का इतिहास विभिन्न आन्दोलनों, विचारधाराओं, विजयोत्सवों, शासन पद्धतियों, धार्मिक और सामाजिक आंदोलनों की गहरी परंपरा से भरा हुआ है। इसके परिणामस्वरूप भारतीय समाज विभिन्न संस्कृति और विरासतों के आधार पर आधुनिक भारतीय समाज का निर्माण करता रहा है। जाति एक प्रकार का संकुचित निगम है जिसमें दूसरों के लिए स्थान नहीं है। यह निगम कठोर रूप से पैत्रिक व्यवस्था पर आधारित होता है। जाति सदस्यों के वर्गीकरण का आधार होता है। विभिन्न जातियों में आजीविका, विवाह, भोजन तथा छूआछूत सम्बन्धी आचार-विचार और सामाजिक प्रथाओं की एकरूपता पायी जाती है।

'अनुसूचित जाति' शब्द साइमन कमीशन द्वारा 1935 में प्रयोग किया गया था जोकि अस्पृष्य लोगों के लिए प्रयोग में लाया गया। डॉ. अम्बेडकर के अनुसार आदि कालीन भारत में इन्हें 'भग्न पुरुष' (Broken Man) या बाह्य जाति (Out Castes) माना जाता था। अंग्रेज इन्हें दलित वर्ग (Depressed Class) कहते थे।

सैकड़ों वर्षों से अनूसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और पिछड़े वर्गों के बालक-बालिकाएं, दबे-कुचले रहे विकास के अवसर उनको प्राप्त नहीं हुए, उनकी शिक्षा की ओर कोई ध्यान नहीं दिया गया और उनका शोषण किया गया। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद उन्नति और विकास के दरवाजे उनके लिए खोल दिए गए हैं। उनके सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और शैक्षिक उन्नयन के लिए केन्द्रीय और राज्य सरकारों ने विशेष प्रयास किये हैं। संविधान में भी इनके उत्थान के लिए विशेष प्रावधान रखे गये हैं। राजनैतिक और शैक्षिक क्षेत्र में इनके लिए आरक्षण की व्यवस्था की गयी है।

लोकसभा और विधान सभाओं में इनके लिए सीटों के आरक्षण की सुविधा प्रदान की गयी है। सरकारी नौकरियों में भी इनके लिए आरक्षण किया गया है। शिक्षा के क्षेत्र में भी इनको अत्यधिक सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं। नयी शिक्षा नीति में दिये गये सुझावों के अनुरूप इन वर्गों के बच्चों को पहली कक्षा से ही छात्रवृत्ति योजना शुरू की गयी है। विभिन्न कक्षाओं में प्रवेश के लिए इनको आरक्षण दिया जा रहा है। इनके लिए उपचारात्मक शैक्षिक कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं, इन जातियों के बच्चों को व्यावसायिक जानकारी देने तथा नौकरी में जाने से पूर्व प्रशिक्षण देने के लिए केन्द्रीय सरकार ने विशेष प्रशिक्षण केन्द्र खोले हैं। जिन्हें कोचिंग कम गाइडेन्स सेन्टर कहा जाता है। इन जातियों के बच्चों को विदेश में जाकर शिक्षा प्राप्त करने के लिए छात्रवृत्तियाँ देने की व्यवस्था की गई है। इसके साथ ही इनके व्यवसासिक उन्नयन के लिए भी विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में तथा सरकारी योजनाओं में समय-समय पर विशेष प्रावधान किए जाते रहते हैं। इसके बाद भी आज भी अनुसूचित जातियाँ विभिन्न शैक्षिक व दैनिक जीवन की समस्याओं से ग्रसित हैं जिसके कारण शिक्षा व जीवन में समायोजन सम्बन्धी व अन्य समस्याओं से ग्रस्त हैं। समायोजन एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। साथ ही साथ व्यक्ति, परिस्थिति तथा पर्यावरण के बीचे अपने को समायोजित करने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है। अतः समायोजन को सन्तुलित दशा भी कहा जाता है। समायोजन सम्बन्धी समस्याओं के कारण विद्यार्थी विभिन्न शारीरिक, सांवेगिक एवं व्यवहारिक समस्याओं का निरंतर सामना करते हैं जिस कारण उनका विकास बाधित होता है। अतः माध्यमिक स्तर पर पढ़ने वाले विद्यार्थियों को होने वाली समायोजन सम्बन्धी समस्याओं की पहचान करने हेतु उक्त शोध कार्य 'माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के समायोजन का उनके सामाजिक-आर्थिक स्तर के आधार पर अध्ययन' किया गया है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन:

1. सिंह, श्रीकान्त (2014), ने 'माध्यमिक स्तर पर अनुदानित और गैर अनुदानित विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिन्ता एवं समायोजन क्षमता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन' किया।
2. त्रिवेदी, निशा (2015), ने ''विभिन्न सामाजिक-आर्थिक स्तर की प्रशिक्षित कार्यरत महिलाओं की व्यावसायिक सन्तुष्टि एवं समायोजन का अध्ययन'' किया।
3. सिंह, संध्या (2016), ने ''जौनपुर जनपद के हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन, जीवन मूल्यों तथा अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन'' किया।
4. दीक्षित, शिखा (2017), ने 'उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं समायोजन क्षमता पर शैक्षिक वातावरण के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन' किया।
5. राज, श्रीमती सावित्री (2018), ने 'उच्चतर माध्यमिक स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा अभियान द्वारा संचालित बालिका छात्रावासों का बालिकाओं के समायोजन एवं उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन चम्बल सम्भाग के विशेष सन्दर्भ में' किया।
6. सिंह, आकाश दीप (2019), ने ''वाराणसी जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर उनकी बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा एवं समायोजन का प्रभाव'' का अध्ययन किया।
7. कु. मीनाक्षी (2020), ने ''उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन का उनके मानसिक स्वास्थ्य के संदर्भ में अध्ययन'' किया।
8. द्विवेदी, प्रतिभा (2021), ने ''किशोरावस्था के विद्यार्थियों के तनाव, सृजनात्मकता, समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन'' किया।
9. सिंह, सत्येन्द्र पाल (2022), ने 'प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के समायोजन एवं निष्ठा कार्यक्रम के प्रति शिक्षक के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन' किया।
10. एडेम, एम. अजिला एवं अन्य (2023), ने 'कोविड-19 महामारी के दौरान छात्र समायोजनः अन्वेषण विश्वविद्यालय समर्थन की भूमिका' का अध्ययन अपने शोध पत्र में किया।

समस्या कथन:

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के समायोजन का उनके सामाजिक-आर्थिक स्तर के आधार पर अध्ययन करना है।

प्रमुख शब्दों का परिभाषीकरण:

प्रस्तुत अध्ययन में उपयोग किए गए प्रमुख शब्दों का परिभाषीकरण निम्नानुसार है।

1. माध्यमिक स्तरः उक्त अध्ययन में माध्यमिक स्तर से आशय उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् के उन विद्यालयों से है जिनमें कक्षा 12 तक शिक्षण कार्य होता है।
2. विद्यार्थीः विद्यार्थी से आशय कक्षा 11 में पढ़ने वाले विद्यार्थियों से है।
3. समायोजनः प्रस्तुत अध्ययन में समायोजन से आशय है विद्यार्थी के मुख्य रूप से तीन क्षेत्रों तथा भावात्मक, सामाजिक तथा शैक्षिक समायोजन से है।
4. सामाजिक-आर्थिक स्तरः अध्ययन में सामाजिक-आर्थिक स्तर के अध्ययन हेतु एस के उपाध्याय के सोशियो-इकोनामिक स्टेटस स्केल का प्रयोग किया गया है।

शोध उद्देश्य:

प्रस्तुत अध्ययन के निम्न उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं-

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन उनके सामाजिक-आर्थिक स्तर (उच्च-निम्न) के आधार पर करना।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अनुसूचित जाति के ग्रामीण विद्यार्थियो के समायोजन का अध्ययन उनके सामाजिक-आर्थिक स्तर (उच्च-निम्न) के आधार पर करना।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अनुसूचित जाति के शहरी विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन उनके सामाजिक-आर्थिक स्तर (उच्च-निम्न) के आधार पर करना।

शोध परिकल्पना:

प्रस्तुत अध्ययन हेतु उद्देश्यानुसार निम्न लिखित परिकल्पनाएं निर्धारित की गयी हैं-

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के समायोजन में उनके सामाजिक-आर्थिक स्तर (उच्च-निम्न) के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अनुसूचित जाति के ग्रामीण विद्यार्थियों के समायोजन में उनके सामाजिक-आर्थिक स्तर (उच्च-निम्न) के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अनुसूचित जाति के शहरी विद्यार्थियों के समायोजन में उनके सामाजिक-आर्थिक स्तर (उच्च-निम्न) के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन प्रविधि एवं प्रक्रिया:

विधि- प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षणात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या- प्रस्तुत अध्ययन में शाहजहाँपुर जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को जनसंख्या में रखा गया है।

न्यादर्श- प्रस्तुत शोध कार्य में न्यादर्ष हेतु शाहजहाँपुर जनपद में संचालित माध्यमिक विद्यालयों में से 50 प्रतिशत विद्यालयों का चयन क्रमानुसार प्रतिचयन विधि से करते हुए कुल 210 विद्यालयों में से 105 विद्यालयों का चयन किया गया। इन विद्यालयों में कक्षा 11 में पढ़ने वाले सर्वेक्षण के दिन उपस्थित अनुसूचित जाति के 50 प्रतिशत विद्यार्थियों का चयन लाटरी विधि से किया गया जिसमें कुल 2605 विद्यार्थियों में से 1302 विद्यार्थी शोध हेतु चयनित हुए।

उपकरण:- प्रस्तुत अध्ययन में एन. पी. सी. आगरा द्वारा प्रकाशित एवं डॉ. ए के पी सिन्हा और डॉ आर पी सिंह द्वारा निर्मित विद्यालयी विद्यार्थियों हेतु समायोजन अनुसूची का तथा एस के उपाध्याय के सोशियो-इकोनामिक स्टेटस स्केल का उपयोग किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं विवेचन:

प्रस्तुत अध्ययन में उपकरण के प्रशासन से प्राप्त आँकड़ों को तालिका संख्या 1 में दर्शाया गया है।

तालिका संख्या 1

परिकल्पना सं0	विद्यार्थी	संख्या	माध्य	मानक विचलन	C.R.	5 % सार्थकता स्तर पर तालिका मान	अन्तर	परिणाम निर्वचन
1	उच्च SES विद्यार्थी	252	33.47	15.39	1.90	1.96	निर्थक	स्वीकार
	निम्न SES विद्यार्थी	1050	35.50	14.58				
2	उच्च SES ग्रामीण विद्यार्थी	190	33.97	14.78	2.06	1.96	सार्थक	अस्वीकार
	निम्न SES ग्रामीण विद्यार्थी	720	36.44	14.53				
3	उच्च SES शहरी विद्यार्थी	62	31.94	17.17	0.64	1.96	निर्थक	स्वीकार
	निम्न SES शहरी विद्यार्थी	330	33.44	14.83				

निष्कर्ष

तालिका संख्या 1 के विश्लेषण के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए।

1. यहां टी परीक्षण के आधार पर अन्तर नहीं पाया गया परन्तु माध्यम के आधार पर पाया गया कि निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों का समायोजन उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन से अपेक्षाकृत अच्छा नही है।
2. निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के ग्रामीण विद्यार्थियों का समायोजन उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के ग्रामीण विद्यार्थियों के समायोजन से अपेक्षाकृत अच्छा नहीं हैं।
3. यहां टी परीक्षण के आधार पर अन्तर नहीं पाया गया परन्तु माध्यम के आधार पर पाया गया कि निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के शहरी विद्यार्थियों का समायोजन उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के शहरी विद्यार्थियों के समायोजन से अपेक्षाकृत अच्छा नही है।

शोध के आधार पर ग्रामीण तथा शहरी अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के समायोजन की स्थिति स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है जिससे शिक्षा व समाज से जुड़े लोगों को इस ओर विशेष ध्यान देने की अपेक्षा है।

सन्दर्भ

[1]. पचौरी, गिरीश (2011). उभरते भारतीय समाज में शिक्षक की भूमिका. मेरठः आर. लाल. बुक डिपो।

[2]. लाल, रमन बिहारी (2011). शैक्षिक चिंतन एवं प्रयोग. मेरठः आर. लाल. बुक डिपो।

[3]. अहूजा, राम (2015). भारतीय सामाजिक व्यवस्था. जयपुरः रावत पब्लिकेशन।

[4]. पाठक, पी. डी. (2012). शिक्षा मनोविज्ञान. आगराः श्री विनोद पुस्तक भण्डार।

[5]. सिंह, श्रीकान्त (2014). 'माध्यमिक स्तर पर अनुदानित तथा गैर अनुदानित विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिन्ता एवं समायोजन क्षमता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन', पी-एच.डी. (शिक्षाशास्त्र), वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर।

[6]. त्रिवेदी, निशा (2015). 'विभिन्न सामाजिक-आर्थिक स्तर की प्रशिक्षिक कार्यरत महिलाओं की व्यावसायिक सन्तुष्टि एवं समायोजन का अध्ययन', पी-एच.डी. (शिक्षाशास्त्र), छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर।

[7]. सिंह, संध्या (2016). 'जौनपुर जनपद के हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन, जीवन मूल्यों तथा अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन', पी-एच.डी. (शिक्षाशास्त्र), वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान।

[8]. दीक्षित, शिखा (2017). 'उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं समायोजन क्षमता पर शैक्षिक वातावरण के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन', पी-एच.डी. (शिक्षाशास्त्र), जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर।

[9]. राज, श्रीमती सावित्री (2018). 'उच्चतर माध्यमिक स्तर पर राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान द्वारा संचालित बालिका छात्रावासों का बालिकाओं के समायोजन एवं उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन (चम्बल सम्भाग के विशेष सन्दर्भ में)', पी-एच.डी. (शिक्षाशास्त्र), जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर।

[10]. सिंह, आकाश दीप (2019). 'वाराणसी जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनकी बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा एवं समायोजन का प्रभाव', पी-एच.डी. (शिक्षाशास्त्र), शिक्षा संकाय (कमच्छा), काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

[11]. मीनाक्षी (2020). 'उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्ध एवं समायोजन का उनके मानसिक स्वास्थ्य के सन्दर्भ में अध्ययन', पी-एच.डी. (शिक्षाशास्त्र), वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान।

[12]. द्विवेदी, प्रतिभा (2021). 'किशोरावस्था के विद्यार्थियों के तनाव, सृजनात्मकता, समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन', पी-एच.डी. (शिक्षाशास्त्र), जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र)।

[13]. सिंह, सत्येन्द्र पाल (2022). 'प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के समायोजन एवं निष्ठा कार्यक्रम के प्रति शिक्षक के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन', *International Journal of Research and Analytical Reviews* (IJRAR), Vol. 9, Issue 1, January 2022, accessed from : https://www.ijrar.org/papers/IJRAR1CIP003.pdf

[14]. Edem, M. Azila et. al. (2023). 'Student adjustment during Covid-19 pandemic: Exploring the moderating role of university support'. *Heliyon*, 9 (2023), accessed from : https://doi.org/10.1016/j.heliyon.2023.e13625